वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष :3 अंक : 36 | रविवार 4 जून 2023 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

आमेर रोजगार मेला: 10th, 12th, ITI डिप्लोमा, बीटेक ग्रेजुएट्स को मिलेगा नौकरी पाने का मौका, 15 कंपनियां देगी युवाओं को रोजगार

जयपुर. कासं

जयपुर के कूकस स्थित आर्या कॉलेज में शनिवार को आमेर रोजगार मेला लगा। **10th, 12th, ITI** डिप्लोमा, बीटेक ग्रेजुएट्स को नौकरी पाने का मौका मिला। रिलायंस सुजुकी जैसी 21 बड़ी कंपनियां शामिल हुई। आमेर विधानसभा क्षेत्र के युवाओं के लिए आयोजित किए गए आमेर रोजगार मेला में भारी संख्या में युवाओं का हुजूम उमड़ा, जिसमें लड़कियों और दिव्यांगजन ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये राजस्थान विधानसभा उपनेता प्रतिपक्ष एवं भाजपा पूर्व प्रदेशाध्यक्ष डॉ. सतीश पूनियां ने आज अपने आमेर विधानसभा क्षेत्र के युवाओं को विभिन्न प्रतिष्ठित कंपनियों के माध्यम से रोजगार उपलब्ध करवाने के लिये रोजगार मेला का आयोजन किया, जिसमें हिस्सा लेने वाले युवक और युवतियों में भारी उत्साह देखा गया। रोजगार मेला कूकस के आर्या कॉलेज (मेन कैंपस) में सुबह 09 बजे से शाम 5 बजे तक आयोजित किया गया, जिसमें आमेर विधानसभा के 500 से अधिक युवाओं को देशभर की प्रतिष्ठित निजी कंपनियों के माध्यम से रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाये गये, जिनमें तमाम युवाओं को बड़े पैकेज की नौकरी का भी कम्पनियों की तरफ से ऑफर मिला है और 2800 से अधिक युवाओं ने रजिस्ट्रेशन करवाया। पिछले दिनों आमेर विधानसभा क्षेत्र की विभिन्न ग्राम पंचायतों में पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा लगाये गये रजिस्ट्रेशन कैम्स के माध्यम से हजारों युवाओं के ऑनलाइन आवेदन लिए गये थे और लगभग 21 प्रतिष्ठित निजी कंपनियों ने कूकस के आर्या कॉलेज में

स्टॉल्स लगाकर युवाओं के मौके पर ही इंटरव्यू लेकर शॉर्टलिस्ट कर 500 से अधिक युवाओं को प्लेसमेंट दिए। रोजगार मेला में आमेर विधानसभा क्षेत्र के 10वीं, 12वीं, आइटीआई, डिप्लोमा, ग्रेजुएट, बीटेक इत्यादि शैक्षणिक योग्यता वाले 500 से अधिक युवाओं को निजी क्षेत्र की कंपनियों में अवसर दिये गये, जो युवाओं को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए विधायक सतीश पूनियां की अनूठी पहल और नवाचार है। गौरतलब है कि आमेर विधानसभा क्षेत्र के युवाओं को अगले वर्ष 2024 में भी सतीश पूनियां की तरफ से रोजगार मेला आयोजित कर प्रतिष्ठित कंपनियों के माध्यम से रोजगार के अवसर दिए जाएंगे, जहां कंपनियां शैक्षणिक योग्यता और इंटरव्यू के आधार पर युवाओं को नौकरी के अवसर उपलब्ध कराएंगी। उल्लेखनीय है कि आमेर रोजगार मेला उद्घाटन समारोह में सतीश पूनियां के साथ भाजपा प्रदेश मुख्य प्रवक्ता एवं चौमूं विधायक विधायक रामलाल शर्मा, जिला प्रमुख रमादेवी, जिला अध्यक्ष जितेंद्र शर्मा, प्रधान हरदेव यादव, युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष भगवान शर्मा, मंडल अध्यक्ष दौलत सिंह शेखावत, विभिन्न सरपंच गण, कार्यकर्ता और गणमान्य लोग इत्यादि उपस्थित रहे।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर से गूंजा जौहरी बाजार

जयपुर में पहली बार सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ में हजारों की संख्या में शामिल हुआ सर्वसमाज

जयपुर. शाबाश इंडिया

ढ़ोल नगारों की धुन पर जय हनुमान ज्ञान गुण सागर की गूंज से गुलाबी नगरी सराबोर हो उठा। सांगानेरी गेट स्थित पूर्व मुखी हनुमान मंदिर के बाहर शनिवार शाम को सामूहिक हनुमान चालीसा का पाठ आयोजित किया गया। जयपुर वासियों द्वारा पहली बार सामूहिक रूप से सड़क पर हनुमान चालीसा का पाठ इतने भव्य तरीके से किया गया। हनुमान चालीसा पाठ में हजारों की संख्या में लोग शामिल हुए जिसमें पीले वस्त्र धारण कर काफी संख्या में महिलाएं भी पहुंची। महंत पंडित भंवर लाल शर्मा और श्री हनुमान चालीसा प्रबंध समिति के संरक्षक तथा अध्यक्ष अमरनाथ महाराज के सानिध्य में हनुमान चालीसा का पाठ किया गया जिसमें सांगानेरी गेट से लेकर बड़ी

चौपड़ तक काफी संख्या में श्रद्धालु इकठ्ठे हुए। तिवारी की इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब दूधिया रोशनी में हजारों की संख्या में भक्तों ने सड़क पर बैठकर हनुमान चालीसा की चौपाईयां पढ़ी। बैंड बाजे ढोल मृदंग और शंख के धुन से पूरा वातावरण भक्ति में हो उठा जय श्री राम और भारत माता की जय कारों के बीच आयोजन में बड़ी संख्या में हनुमान चालीसा का पाठ किया। श्रद्धालुओं पर आसपास के बरामदे से पुष्प वर्षा भी की गई।

व्यापार मंडल समय से पहले प्रतिष्ठान बंद कर कार्यक्रम में शामिल हुए

जयपुर व्यापार महासंघ के अध्यक्ष सुभाष गोयल महामंत्री सुरेंद्र जयपुर व्यापार मंडल के अध्यक्ष ललित सांचौरा जोहरी बाजार व्यापार मंडल के अध्यक्ष अजय अग्रवाल जयपुर किराना व्यापार मंडल के अध्यक्ष प्रहलाद गोपाल जी का रास्ता व्यापार मंडल के अध्यक्ष हरीश केडिया हवामहल व्यापार मंडल के अध्यक्ष अतुल सहित चारदीवारी के सभी व्यापार मंडल के पदाधिकारियों ने हनुमान चालीसा के सामूहिक पाठ में बढ़-चढ़कर सहभागिता की कार्यक्रम में शामिल होने के लिए व्यापारियों ने दुकानों को निर्धारित समय से पूर्व ही बंद कर दिया। सर्व समाज द्वारा आयोजित हनुमान चालीसा पाठ में सांसद रामचरण बोहरा, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी, पूर्व उपमहापौर मनीष पारीक, कार्यक्रम के संयोजक जयपुर नगर निगम के पूर्व चेयरमैन अजय यादव, पार्षद कुसुम यादव सहित अन्य प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

स्क्रैप से बन रही खूबसूरत सैकेंड लाइफ आर्ट

मीरां गर्ल्स कॉलेज की ओर से पहली बार आयोजित वर्कशॉप में युवा पीढ़ी सीख रही नव सृजन

उदयपुर.शाबाश इंडिया

लेकसिटी में संभाग के सबसे बड़े कन्या महाविद्यालयः मीरां गर्ल्स कॉलेज के चित्रकला विभाग की पहल पर सात दिवसीय स्क्रैप आर्ट वर्कशॉप में शहर और देश के ख्यात 5 कलाकार अपने हुनर को मूर्त रूप देने में संलग्न हैं। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. मीना बया ने बताया कि बरसों से कबाड़ का हिस्सा बने पुराना लकड़ी और लोहे का फर्नीचर, पाइप, सीलिंग फैन, टूटे जंग लगे चैनल गेट और ट्री गार्ड जैसी कई अन्य वस्तुओं को लेकर कला साधक सृजनशील हैं। उन्होंने कहा कि महाविद्यालय स्तर पर पहली बार आयोजक मंडल के सहयोग से शहर के इस कॉलेज में ऐसी कार्यशाला आयोजित हो रही है। समापन पश्चात ये सभी कलाकृतियां कॉलेज परिसर में लगाई जाएंगी, ताकि महाविद्यालय के सौंदर्य को बढ़ाने के साथ - साथ आमजन सहित कला विद्यार्थियों में इसकी समझ पैदा हो सके। समन्वयक प्रो. दीपक भारद्वाज ने बताया कि स्क्रैप आर्ट स्कल्पचर बनाने के लिए उदयपुर के प्रतिभाशाली कलाकार दिनेश उपाध्याय, रोकेश कुमार और पुष्पकांत द्विवेदी के साथ विशाखापत्तनम से अप्पाला राजू तथा इंदौर से कपिल अग्रवाल महाविद्यालय की अनुपयुक्त सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। इस दौरान कॉलेज में अध्ययनरत कई छात्राएं भी उनके सन्निंध्य में इस कला की बारीकियां सीख रही हैं। इन कला प्रशिक्षुओं में कशिश, सुरभि, जीनू और विशाखा रैगर, निधि सौम्या, दीपिका मेघवाल, निशी श्रीमाली तथा इंदु राठौड़ प्रमुख हैं। गौरतलब है कि कार्यशाला को सफल बनाने में मुख्य सलाहकार प्रो. जुजार हुसैन, सलाहकार प्रो. अंजना गौतम और डॉ. मंजू बारुपाल, अयोजन सचिव डॉ. रामसिंह भाटी व सहसचिव डॉ. दीपक सालवी पूरे मनोयोग से जुटे हैं।

रिपोर्ट/ फोटो : राकेश शर्मा 'राजदीप'
मोबाइल : 9829050939

सर्वधर्म मैत्री संघ द्वारा रेल दुर्घटना दुखद त्रासदी हेतु किया शांति पाठ व सद्भावना प्रार्थना

अनिल पाटनी. शाबाश इंडिया

अजमेर । आज दिनांक 03 जून 2023 ओडिसा मोलोसर में हुई दुखद रेल दुर्घटना में सैकड़ो की संख्या में हुई मृत्यु, लापता परिवार, अस्पताल में सैकड़ो की संख्या में भर्ती लोगो के लिए आज सर्वधर्म मैत्री संघ के पदाधिकारियों के द्वारा शांतिपाठ का आयोजन किया गया। यह जानकारी देते हुए अध्यक्ष प्रकाश जैन ने बताया कि संस्था के उद्देश्यों में प्रमुखतः प्राकृतिक आपदाओं से या दुर्घटना इत्यादि से हुई सामुहिक मृत्यु पर शांतिपाठ एवं सद्भावना प्रार्थना की जाती है। इसी क्रम में आज ओडिसा में हुई दुखद रेल त्रासदी हेतु रामगंज स्थित गुरुद्वारे में सर्वधर्म मैत्री संघ के पदाधिकारियों द्वारा शांतिपाठ व मौन प्रार्थना का आयोजन किया गया। जिसमें सरदार ज्ञानीजी सरज्ञन सिंह के द्वारा सभी की तरफ से अरदास की गयी तथा सभी बहनो व सर्वधर्म के पदाधिकारियों ने मृतको की आत्मा की शांति हेतु मौन प्रार्थना की गई। पं. राजू शर्मा के द्वारा शांतिपाठ किया गया व अस्पताल में भर्ती घायलो के उत्तम व शीघ्र स्वस्थ हेतु एवं लापता लोगो के लिए सद्भावना प्रार्थना की गयी। इस अवसर पर निदेशक फादर कॉस्मोस शेखावत, मोहम्मद अली बोरा, सरदार जे. एस. सोखी, सतनाम सिंह, बधिस्ट ज्योतियाना साहिब सहित अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

पांच दिवसीय पांडुलिपि कार्यशाला का समापन

जयपुर. शाबाश इंडिया। राजस्थान संस्कृत अकादमी के वैदिक हैरिटेज एवं पांडुलिपि शोध संस्थान जयपुर के तत्वावधान में चल रही पंच दिवसीय पांडुलिपि प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह आज बीकानेर में हुआ। राजस्थान संस्कृत अकादमी अध्यक्ष डॉ. सरोज कोचर के निर्देशन में आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अभय ग्रन्थालय के प्रमुख श्री ऋषभ नाहटा ने ग्रन्थालय में संरक्षित 1 लाख पांडुलिपियो पर राजस्थान संस्कृत अकादमी की ओर से कार्य कराये जाने पर हर्ष व्यक्त किया। अध्यक्षता करते हुए डॉ सरोज कोचर ने बताया कि यह प्रशिक्षण राजस्थान में पहला ही प्रशिक्षण है। आगामी योजनाएं बताते हुए डॉ कोचर ने स्कूल स्तर पर लिपि ज्ञान शुरू करने के लिए बताया, राजस्थान संस्कृत अकादमी के माध्यम से पांडुलिपि के लिपि , संरक्षण, संवर्धन के कार्य के लिए अकादमी कटिबद्ध है। अंत में पांडुलिपि समन्वयक डॉक्टर सुरेंद्र शर्मा ने पांडुलिपि क्षेत्र में रोजगार की जानकारी प्रदान की। प्रशिक्षण में 40 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। इसमें प्रमाण पत्र वितरित किए गए। पांडुलिपि का प्रशिक्षण जयप्रकाश शर्मा,पंकज जेमिनी,अवधेश वशिष्ठ, मनमोहन स्वार्थी द्वारा प्रदान किया गया ।

ट्रैक एंड क्लीन केम्पैन से दिया स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का संदेश

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री मुनिसुव्रतनाथ फाउंडेशन द्वारा ट्रैक एंड क्लीन नामक केम्पैन की शुरूआत जयपुर स्थित गढ़गणेश मंदिर से की गई। युवा वॉलिंटियर्स द्वारा स्वस्थ्य रहने के लिए ट्रेकिंग की गई साथ ही रस्ते में मौजूद नॉन बायोडिग्रेडेबल, प्लास्टिक अन्य कचरे का संग्रहण कर नियत स्थान पर निस्तारित किया। मुहिम से जुड़े जेडीए जयपुर के डिप्टी कमिश्नर नवीन बड़जात्या ने कहा की श्रमदान आवश्यक है, शहर एवं देश को स्वछ रखने ले अलवा भी हमारे सभी तीर्थ एवं पवित्र स्थलों को भी मुख्य रूप से स्वच्छ रखने का दायित्व निभाना होगा। इस मुहिम में नमन सान्खुनियां, अंकित मित्रपुरा, धीरेंद्र मंगल, अरुण जैन, अक्षत, कुणाल अभिषेक सांघी इत्यादि सदस्य के साथ-साथ आम जनता ने भी सामाजिक सरोकार में हाथ बढ़ाया।

सुबोध महाविद्यालय में चलाया परिंडा लगाओ अभियान

जयपुर. शाबाश इंडिया। एस एस जैन सुबोध महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाइयों द्वारा महाविद्यालय परिसर में परिंदा लगाओ अभियान शुरू किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य प्रो के बी शर्मा ने बताया कि इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुंवर राष्ट्रदीप आईपीएस थे। प्राचार्य ने बताया कि अभियान के तहत करीब 500 से अधिक परिंडे लगाए जाएंगे। मुख्य अतिथि ने कहा कि इस भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए पानी की व्यवस्था करना है। उन्होंने सभी स्वयंसेवकों को कहा कि वे नियमित रूप से इन परिंदों में पानी भरे। परिंदा लगाओ अभियान में डॉ विशाल गौतम, कार्यक्रम अधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना ने अपने स्वयंसेवकों जय गौतम, शुभम गौतम, शुभम पारीक, मनीषा गुप्ता, नेहा शर्मा, प्रांची कटवा रिया कुमारी, प्रत्युष जैन, मोहित महला, हर्षिता जैन सहित बहुत से स्वयंसेवकों ने इस पुनीत कार्य में भाग लिया और पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी ली।

आओ मिलकर एक एक पौधा लगाएं

राजेश जैन दद्दू. शाबाश इंडिया

इंदौर। दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, जैन राजनैतिक चेतना मंच के आह्वान पर समस्त रीजन समस्त सोशल ग्रुप इस वर्ष 4 जून रविवार को प्रात 9बजे ''विश्व पर्यावरण दिवस'' पौधे लगाकर मनाया जाएगो पर्यावरण दिवस के इस अवसर पर फेडरेशन पदाधिकारी, सोशल ग्रुप, रीजन और समस्त सोशल ग्रुप सदस्य आप सभी सदस्य बंधु प्रतिभा स्थली रेवती रेंज पर सुबह 8 बजे आमंत्रित है, संजीव जैन सजिवनी ने सबसे विनम्र निवेदन किया कि आप प्रतिभा स्थली पर व्हाइट एवं ग्रीन ड्रेसकोड अनुसार पहनकर पौधारोपण के कार्यक्रम मे अवश्य पधारे और पौधा लगाकर हरियाली और खुशहाली का संदेश दे इसमे अपनी सहभागिता अवश्य निभाएं।

वेद ज्ञान

मन में प्रेम का भाव रखें

घृणा और प्रेम मानव मन की दो ऐसी भिन्न अवस्थाएं हैं, जिसके हम सभी अनुभवी हैं। एक ओर जहां प्रेम दूसरों को आकर्षित करता है, वहीं दूसरी और घृणा विकर्षित करती है। वातावरण में कटुता, क्रोध, गंदगी फैलाती है, मानसिक रोग उत्पन्न करती है और आत्म-भाव में संकोच उत्पन्न करती है। आधुनिक मनोविज्ञान की खोजों से पता चलता है कि हमारी किसी विशेष व्यक्ति अथवा वस्तु के प्रति घृणा का प्रमुख कारण हमारे ही अंदर है। प्रायः देखा जाता है कि जो व्यक्ति जिस प्रकार के लोगों से घृणा करता है, वह स्वयं भी कुछ काल के अनंतर उन्हीं घृणित गुणों को अपना लेता है। घृणा एक ऐसी अग्नि है, जिसमें मनुष्य का अपना ही रक्त और मस्तिष्क ईंधन की तरह जलने लगते हैं। उसका खून खौलता रहता है, वह डाह एवं रोष के मारे जलता है, उसका विवेक नष्ट हो जाता है और उसका शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य भी बिगड़ने लगता है। घृणा की मनोवृत्ति किसी विशेष विचार को हमारे मस्तिष्क में बैठा देती है। संवेगों के उत्तेजित होने पर कभी-कभी यही वाह्य विचार का रूप धारण कर लेते हैं और जितना ही अधिक हम उनको भूलना चाहते हैं, उतने ही वे हमारे मन को जकड़ते जाते हैं और अंत में मानसिक रोग का रूप धारण कर लेते हैं। घृणा की मनोवृत्ति का मूल कारण हमारे मन में स्थित कोई ग्रंथि होती है, जिसको पहचानकर सुलझाने की कोशिश हमें करनी चाहिए। ग्रंथि के सुलझते ही घृणा की मनोवृत्ति भी अपने आप नष्ट हो जाएगी। साधारणतः हम अपनी बुराइयों को स्वीकार नहीं करना चाहते, किंतु आध्यात्मिक नियमानुसार हमें एक न एक दिन अपनी बुराइयों को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना ही पड़ता है। तत्पश्चात हमारी प्रकृति धीरे-धीरे हमें आत्म-स्वीकृति की ओर ले जाना आरंभ करती है। पहले हम अपने इन दुगुर्णों को दूसरों में देखने लगते हैं और धीरे-धीरे उन्हीं पर विचार करते-करते स्वयं उनके शिकार बन जाते हैं। वास्तव में दुर्गुण कहीं बाहर से नहीं आते। वे तो पहले ही हमारे भीतर मौजूद रहते हैं। हम ही उनकी उपस्थिति स्वीकार नहीं करते इसीलिए प्रकृति टेढ़े-मेढ़े रास्ते से उनकी आत्म-स्वीकृति कराती है। अगर प्रारंभ में ही हम इन दुर्गुणों को मान लें, तो उनसे छुटकारा पा जायें।

संपादकीय

स्कूली शिक्षा बीच में छोड़ना बेहद घातक

किसी भी देश की शिक्षा व्यवस्था की कामयाबी इसमें है कि शुरूआती से लेकर उच्च स्तर तक की शिक्षा हासिल करने के मामले में एक निरंतरता हो। अगर किसी वजह से आगे की पढ़ाई करने में किसी विद्यार्थी के सामने अड़चनें आ रही हों तो उसे दूर करने के उपाय किए जाएं। लेकिन बीते कई दशकों से यह सवाल लगातार बना हुआ है कि एक बड़ी तादाद में विद्यार्थी स्कूल-कालेजों में बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं और उनकी आगे की पढ़ाई को पूरा कराने के लिए सरकार की ओर से ठोस उपाय नहीं किए जाते। इस मसले पर सरकार से लेकर शिक्षा पर काम करने वाले संगठनों की अध्ययन-रपटों में अनेक बार इस चिंता को रेखांकित किया गया है, लेकिन अब तक इसका कोई सार्थक हल सामने नहीं आ सका है। अब एक बार फिर केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से सन

2022 की बोर्ड परीक्षाओं के विश्लेषण में बताया गया है कि दसवीं और बारहवीं के स्तर पर देश में लाखों बच्चे पढ़ाई छोड़ देते हैं। विश्लेषण के मुताबिक, पिछले साल पैंतीस लाख विद्यार्थी दसवीं के बाद ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने नहीं गए। इनमें से साढ़े सत्ताईस लाख सफल नहीं हुए और साढ़े सात लाख विद्यार्थियों ने परीक्षा नहीं दी। संभव है कि बीच में पढ़ाई छोड़ने के संदर्भ में किसी की प्रत्यक्ष की भूमिका नहीं दिखाई दे, लेकिन आखिर यह व्यवस्थागत कमियों से ही जुड़ा हुआ सवाल है, जिसमें स्कूली शिक्षा के स्वरूप से लेकर सामाजिक-आर्थिक कारक अपनी भूमिका निभाते हैं। शिक्षा मंत्रालय के विश्लेषण में आंकड़ों के मुताबिक जो पैंतीस लाख विद्यार्थी दसवीं के बाद ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने नहीं गए, उनमें पचासी फीसद ग्यारह राज्यों से थे। इसी तरह, पिछले साल बारहवीं के बाद 23.4 लाख विद्यार्थियों ने बीच में पढ़ाई छोड़ दी। इनमें से सतहत्तर फीसद ग्यारह राज्यों से थे। यानी करीब अट्ठावन लाख विद्यार्थी दसवीं और बारहवीं में पढ़ाई छोड़ देते हैं तो यह किसी भी सरकार के लिए बेहद चिंता की बात होनी चाहिए और यह समग्र शिक्षा व्यवस्था से लेकर सरकारी कल्याण कार्यक्रमों के जमीनी स्तर पर अमल पर सवालिया निशान है। गौरतलब है कि सरकार की ओर से आए दिन देश की शिक्षा व्यवस्था में व्यापक बदलाव करने और उसे समावेशी बनाने को लेकर दावे किए जाते हैं, घोषणाएं की जाती हैं। लेकिन वे शायद ही कभी वास्तव में जमीन पर उतरती दिखती हैं। नीतिगत स्तर पर शिक्षा को उच्च प्राथमिकता मिलती दिखती है, मगर इसके बरक्स स्कूली शिक्षा में बीच में पढ़ाई छोड़ने की प्रवृत्ति नीतिगत स्तर पर नाकामी या फिर उदासीनता का ही सूचक है। यह समझना मुश्किल है कि इतने लंबे वक्त से यह चिंता कायम है और इस मसले पर किसी हल तक पहुंचना मुश्किल है! यह जगजाहिर तथ्य है कि एक ओर स्कूल-कालेज में शिक्षा पद्धति में तय मानक बहुत सारे विद्यार्थियों के लिए सहजता से ग्राह्य नहीं होते, वहीं पढ़ाई में निरंतरता नहीं रहने के पीछे सामाजिक और आर्थिक कारक भी एक बड़ी भूमिका निभाते हैं। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

ठगी का संसार...

देशभर से ऐसी खबरें अक्सर आती रहती हैं जिनमें बताया जाता है कि किसी व्यक्ति या गिरोह ने फर्जी कंपनी खोल कर साधारण लोगों को ठगी का निशाना बनाया और सरकार को भी काफी नुकसान पहुंचाया। इनका पता तब चलता है जब किसी तरह की गई शिकायत तूल पकड़ ले और पुलिस उसे जांच का विषय बनाए। अन्यथा वे अपना काम धड़ल्ले से चलाते रहते हैं। गुरुवार को उत्तर प्रदेश के नोएडा में पुलिस ने उन आठ लोगों को गिरफ्तार किया, जो फर्जी कंपनियां खोल कर अपना धंधा चला रहा रहे थे और इसके जरिए सरकार को भी अरबों रुपए का नुकसान पहुंचा रहे थे। इस काम को अंजाम देने के सारे आधुनिक तकनीकों से लैस इन लोगों ने देश के अलग-अलग राज्यों में कई कंपनियां खोलीं और माल एवं सेवा कर यानी जीएसटी का दावा करके अवैध तरीके से भारी कमाई की। शुरूआती जांच में यही सामने आया है कि ये लोग फर्जी बिल तैयार करके लाखों रुपए की खरीदारी दिखाते थे और उस पर जीएसटी का फायदा उठाते थे। यही नहीं, ये लोग कर चोरी करने वाले अन्य गिरोहों के साथ मिल कर उन्हें भी लाभ पहुंचाते थे। इनकी शातिर गतिविधियों का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि सरकारी एजेंसियों की आंखों में धूल झोंक कर इन लोगों ने अपना धंधा धड़ल्ले से चलाया और अब तक ये फर्जी तरीके से दो हजार छह सौ पचास कंपनियां बना कर बेच चुके हैं। पुलिस की ताजा कार्रवाई और पकड़ में आने के पहले वे इसी तरह की आठ सौ अन्य कंपनियां भी बेचने की फिराक में थे। इस रास्ते से आरोपियों ने हजारों करोड़ रुपए की चोरी की। आमतौर पर सरकार और प्रशासन का दावा यही रहता है कि उनके तंत्र की चौकसी की वजह से इस तरह की गड़बड़ी करने वालों को मौका नहीं मिल सकता। लेकिन हैरानी की बात यह है कि ये आरोपी लंबे समय से साधारण और गरीब लोगों को भी ठगी का निशाना बना कर पैन कार्ड या अन्य पहचान पत्र के जरिए दस्तावेजों में हेराफेरी करके अपना अवैध धंधा चलाते रहे और सरकार की संबंधित निगरानी एजंसियों को इसकी भनक तक नहीं पड़ी। संबंधित निगरानी एजंसियों की लापरवाही या उदासीनता के बिना दो हजार छह सौ पचास कंपनियां बना कर बेचने में लगने वाले वक्त और उसकी बिक्री की प्रक्रिया पूरी करने का काम कैसे इतने सुविधाजनक तरीके से संभव है! ऐसा नहीं है कि इस तरह का कोई पहला मामला है। जैसे-जैसे इंटरनेट आधारित कामकाज का विस्तार हो रहा है, कुछ लोग या गिरोहों ने इसके कमजोर पहलुओं का फायदा उठा कर आम लोगों को निशाना बनाना शुरू कर दिया है। लोगों के पैन कार्ड, फोन नंबर आदि हासिल कर उसमें हेराफेरी कर उसके जरिए कई तरह के घपले किए जाते हैं। ये ठग लोगों के खाते से पैसे गायब करने, फर्जी कंपनी बना कर बैंक से ऋण लेकर गायब होने जैसी कई ठगी को अंजाम देते हैं। ज्यादातर कामकाज के डिजिटल होते जाने के दौर में सरकार का दावा यह रहता है कि इसे उतना ही सुरक्षित बनाया गया है और साइबर गतिविधियां हर समय निगरानी के दायरे में हैं लेकिन इससे संबंधित गड़बड़ी जांच के दायरे में तभी आती है, जब कोई पीड़ित इससे संबंधित शिकायत दर्ज कराता है।

आचार्य श्री विवेकसागर जी महाराज ने कहा...

लोभ ही मानव के दुःख व लड़ाई झगड़े का कारण

कुचामन सिटी. शाबाश इंडिया। आचार्य श्री 108 विवेकसागर जी महाराज ने दिगंबर जैन नागौरी मंदिर कुचामन में विशाल धर्मसभा में लोभ को दुख का कारण बतलाते हुए कहा कि शरीर व मन के समस्त रोग लोभ से पैदा होते हैं। लोभ की मात्रा घटती नहीं, मगर दिनों दिन घटने की बजाय निरंतर बढ़ती चली जाती है। प्रभु महावीर ने कहा ज्यों-ज्यों लाभ होता है त्यों-त्यों लोभ और अधिक मात्रा में बढ़ता चला जाता है। आज तक जितने भी युद्ध -मन मुटाव -हिसा -अत्याचार या अनाचार हुए हैं उसके पीछे एक ही कारण लोभ का रहा है। इंसान की इच्छाएं अनंत होती हैं जो कदापि पूर्ण नहीं हो पाती। इंसान खाली हाथ आता है एवं एक दिन खाली हाथ ही प्रस्थान कर जाता है। लोभ तन का, मन का, धन का, कुटुम्ब कबिला, जमीन जायदाद का या पद प्रतिष्ठा का नानाभांति जीवन में प्रगट होता रहता है। मन में हजारों कल्पनाएं उभरती रहती है। प्रभु महावीर ने इस लोभ को जीतने के लिए संतोष का मार्ग बतलाया जैन श्रावकों के लिए परिग्रह परिणाम व्रत की व्याख्या की। वस्तुओं की मयार्दाओं से ही मन पर काबू पाया जा सकता है। राजा महाराजाओं के युद्ध इसी लोभ के चलते हुए हैं। खाने को कहा जाता है तो दो रोटी की जरूरत पड़ती है। फिर पता नहीं इंसान इतना लोभ में क्यों डूबा जा रहा है। कृपण व्यक्ति के पास लक्ष्मी आ भी जाए फिर भी वह इसका उपयोग नहीं कर पाता। कहावत है कीड़ी संचे तीतर खाये अर्थात संचय तो किड़िया करती जाती है खाने वाला कोई अन्य ही होता है। लोभ को पाप का बाप भी कहा जाता है। सारे पाप इसी के इर्द गिर्द घूमते रहते है। इसलिए बंधुओं हमें लोभ से बचना चाहिए, क्योंकि लोभी जीव कहीं का न होता,किसी का नहीं होता। इसलिए अपने जीवन में हमें लोभ को त्याग देना चाहिए,जितना है उसी में संतुष्ट रहना चाहिए। तभी हम अपने जीवन को सुखी और निरोग बना सकते हैं।

फलासिया में युवा परिषद के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का हुआ भव्य स्वागत

फलासिया. शाबाश इंडिया। अखिल भारतवर्षीयय दिगंबर जैन युवा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉक्टर जीवन प्रकाश जैन जंबूद्वीप हस्तिनापुर, राष्ट्रीय महामंत्री उदय भान जैन जयपुर, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जैन जयपुर, प्रदेश मंत्री धनपाल गंगावत, उदयपुर जिला अध्यक्ष जिला उदयपुर देहात सुनील जैन ऋषभदेव(उदयपुर) का अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद् के अध्यक्ष कार्तिक जैन एवं फलासिया पदाधिकारियों ने फलासिया पहुंचने पर भव्य स्वागत किया। बैठक में संगठन की मजबूती, बुलेटिन की सदस्यता अभियान तथा जैन धर्म की प्रभावना को बढ़ाने पर हुई चर्चा। डॉ. जीवन प्रकाश जैन ने 1977 से स्थापित युवा परिषद् संगठन की उपलब्धियों के संबंध में युवाओं से विस्तृत चर्चा की। राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने युवा परिषद के संगठनात्मक बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए युवा परिषद की आवश्यकता पर प्रकाश डाला,युवा परिषद् द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय जैन समाचार पत्र युवा परिषद् बुलेटिन मई 2023 अंक का विमोचन कराया।

फागी में नौ दिवसीय श्रमण संस्कृति संस्कार शिक्षण शिविर प्रारम्भ

परिवार में मां का अपने बच्चों को संस्कारित करने का प्रमुख कर्तव्य होता है...

फागी. शाबाश इंडिया। पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 2 जून से शुरू हुए शिक्षण शिविर के भव्य उद्घघाटन के पश्चात दोपहर में रत्न करण्ड श्रावकाचार और तत्वार्थ सूत्र की कक्षाएं लगी तथा सांयकाल को हुई शास्त्र सभा और प्रश्न मंच में, शास्त्री सत्येंद्र जैन टीकमगढ़ ने महिलाओं को बताया की कैसे बच्चो को धर्म मार्ग में लाया जाए, अगर बचपन में ही उनकी उंगली पकड़ कर सही राह दिखाई जाए तो वो आपके अंत समय में आपके साथ रहेंगे ,, वरना संस्कार रहित और गलत संगत में पड़कर अपना जीवन बर्बाद कर देंगे , इसलिए मां का अपने बच्चे को संस्कारित करने का प्रमुख कर्तव्य होता है कार्यक्रम में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने अवगत कराया कि इसी कड़ी में आज शिविर के दूसरे दिन जैन धर्म रक्षक पाठशाला के बच्चों द्वारा प्रातः श्री जी का अभिषेक शांतिधारा और जिनपूजा की गई पूजन में बताया की जल, चंदन,अक्षत आदि अष्ट द्रव्य क्यों प्रभु के सामने अर्पण किए जाते है शास्त्री जी ने इसकी विस्तार से जानकारी देकर बच्चों को उत्साहित किया, कार्यक्रम संयोजक निखिल जैन एवं शिविर व्यवस्थापक विनोद मोदी ने बताया कि शिविर में भक्तामर स्तोत्र और बाल बोध की कक्षाएं हुई , सभी शिविरार्थी अच्छा लाभ ले रहे हैं। कार्यक्रम में समाज सेवी सोहनलाल झंडा, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, महेंद्र बावड़ी, अशोक कागला, विनोद मोदी, कमलेश चोधरी, शैलेन्द्र कलवाडा, त्रिलोक पीपलू, तथा राजाबाबू गोधा सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मोजूद थे।

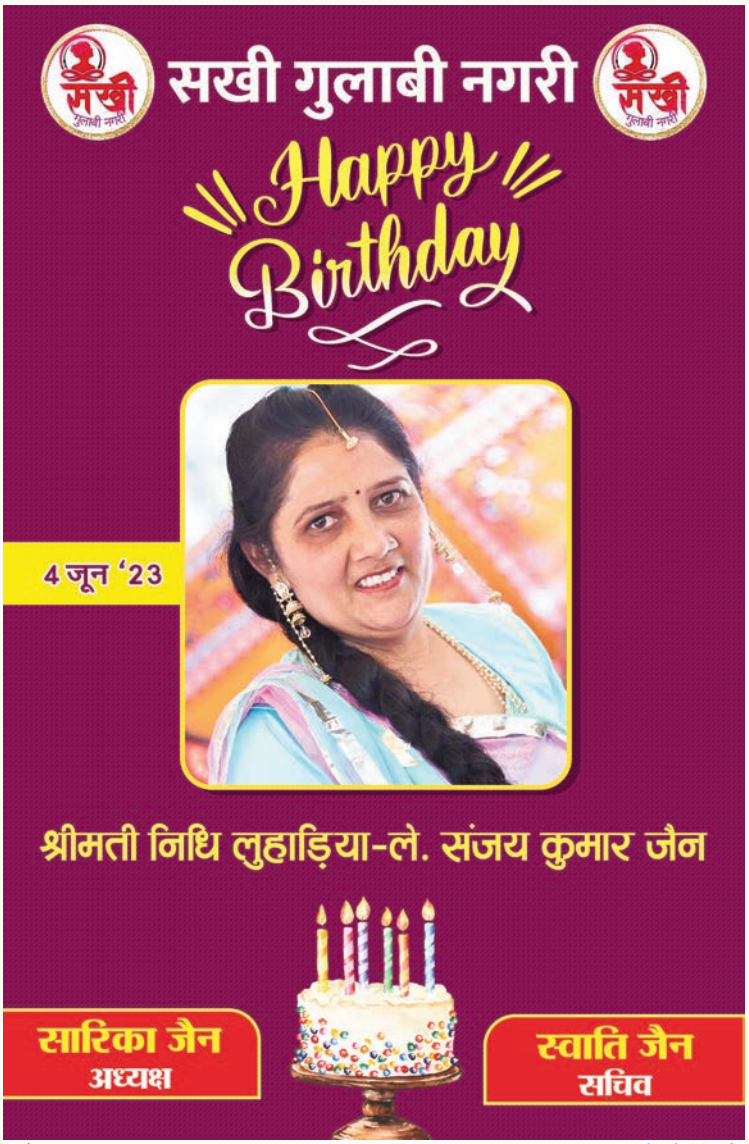

जिनेन्द्र पूजा विज्ञान...

गतांक से आगे....

पूजा के अष्टद्रव्य में प्रथम भगवान के श्री चरणों में जल अर्पित करके हमें जन्म मरण से मुक्त होने की भावना रखनी चाहिए; जल को ज्ञान का प्रतीक माना गया है तथा अज्ञानता को जन्म मरण का कारण माना गया है, इसलिए ज्ञानरूपी जल हमारे पापों तथा दुखों की शांति, तथा जन्म मरण जरा का विनाश कर मुक्त कराने में सहायक बनता है।

जल हमें यह संदेश भी देता है कि हम उस ही की तरह से सभी के साथ घुलमिल कर जीना सीखें। जल की तरह तरल और निर्मल होना भी सीखें।

फिर चंदन अर्पित करते हुए हमारी भावना यह होनी चाहिए कि हमारा भव- आताप मिटे, चंदन शीतलता का प्रतीक है भव भव की तपन का कारण हमारी आत्मदर्शन से विमुखता है अतः भगवान के श्री चरणों में चंदन अर्पित करने से सुगंधित शरीर की प्राप्ति होती है संसार संताप का विनाश होता है। चंदन हमें यह भी संदेश देता है कि हम उस की तरह सभी के प्रति शीतलता और सौहार्द से भरकर जिए सभी की पीड़ा को अपनी पीड़ा मानकर सभी को सहानुभूति दें। अब श्री चरणों में अक्षत का अर्पण, हम अखंड अविनाशी सुख पाने की भावना से करें। इस लोक में संपत्ति की प्राप्ति हो, तथा अक्षय पद जो परमात्मा को प्राप्त हुआ है वह हमें भी प्राप्त हो ।अक्षत की अखंडता और उज्जवलता जीवन में अविनश्वर और उज्जवल सुख का अहसास कराए।

पुष्प अर्पित करते समय हमें कामवासना से मुक्त होने की भावना रखनी चाहिए पुष्प को कामवासना का प्रतीक माना गया है तीर्थंकर देव के श्री चरणों में पुष्प अर्पण करने से स्वर्ग की मंदारमाला की प्राप्ति होती है तथा काम एवं इंद्रियों पर विजय प्राप्त होती है भगवान जिनेंद्र के श्री चरणों में पुष्प चढ़ाना स्वयं को मोह मुक्त करने का प्रयास है।

पश्चात नैवेद्य अर्पित करते हुए हमें यह भावना रखनी चाहिए कि हमारी भव भव की भूख मिट जाए,नैवेद्य अर्पण करने से लोकिकता में लक्ष्मी की प्राप्ति होती है क्षुधा रोग का विनाश होता है। नैवेद्य हमें यह संदेश भी देता है -खाद्य पदार्थों के प्रति आसक्ति कम करना तथा उसे

रमेश गंगवाल
मन. 1127, मनिहारों का रास्ता,
किशनपोल बाजार जयपुर , राजस्थान
9414409133 , 8302440084

योग्य पात्र को दे देना ही श्रेयस्कर है। जिनेन्द्र देव के श्री चरणों में दीप प्रज्वलित कर अर्पण करें, दीप जहां भी रहे वहीं रोशनी प्रस्फुटित हो, हमारे शरीर रूपी माटी के दिये में प्राणी मात्र के प्रति स्नेह कभी कम ना हो और भगवान के नाम की लौ निरंतर जलती रहे। ऐसे अद्वितीय दीप को पाने की भावना रखें ,जो बिना बाती, तेल और धुएं के भी सारे जगत को प्रकाशित करता है। अग्नि में धूप नीक्षेपण करने से उत्कृष्ट सौभाग्य की प्राप्ति होती है। तथा आठों कर्मों का विनाश होता है। धूप से हमें यह संदेश मिलता है कि धूप की सुगंध जैसे अमीर गरीब या छोटे बड़े का भेद नहीं करती । और सभी के पास समान भाव से पहुंचती है ,ऐसे ही हम भी अपने जीवन में भेदभाव छोड़कर सर्व प्रेम और सर्व मैत्री की सुगंध फैलाते रहे। तीर्थंकर देव के सम्मुख श्री चरणों में फल अर्पण करें, फल इस भावना के साथ अर्पित करें कि हमें उत्तम पद की प्राप्ति होगी तथा मोक्ष फल की प्राप्ति होगी ।संसार में सिवाय कर्म फल भोगने के हम कुछ और नहीं कर पा रहे हैं। अतः अपने अनंत बल को हम प्रकट करें ,और मोक्ष फल को प्राप्त करें ।फल हमें यह संदेश देता है कि सांसारिक फल की आकांक्षा व्यर्थ है। हम जो भी करें अच्छा ही करें अनासक्त भाव से कर्तव्य मानकर करें कर्तव्य के अहंकार से मुक्त रहें। अष्ट द्रव्यों की संपूर्णता ही अर्घ्य है। अर्घ्य का अर्थ मूल्यवान भी होता है, अर्घ्य अर्पित करके हमारी भावना अनर्घ्य यानी अमूल्य पद को पाने की रहे। आत्म उपलब्धि ही अमूल्य है ,वही हमारा प्राप्तव्य है । उसे ही पाने के लिए हमारे सारे प्रयास हो। अर्घ्य से यह संदेश मिलता है ,कि जिन चीजों को हमने मूल्य दिया है, मूल्यवान माना है ,वास्तव में वे सभी शाश्वत और मूल्यवान नहीं है। केवल अमूल्य पद की प्राप्ति हमें हो यही भावना रहनी चाहिए।

हवन की महत्वता

हवन सामग्री में दशांग धूप, लवंग, चंदन, पंचमेवा ,कपूर, घी ,शक्कर तथा विभिन्न प्रकार की काष्ठ समिधा, आदि के होने से प्रदूषण समाप्त होकर पर्यावरण शुद्ध होता है ।शांति मिलती है। क्योंकि हवन के पश्चात किये हवन से कार्बन डाइऑक्साइड गैस नहीं निकलती है। बल्कि शुद्ध सुगंधित वायु मिलती है पूजा के आठ द्रव्यों के भिन्न भिन्न प्रयोजन व लक्षण होते हैं इसीलिए वे सभी सार्थक हैं यह किसी भी रूप में व्यर्थ नहीं है। आत्मिक और आध्यात्मिक शुद्ध भाव पूर्वक पूजन से लौकिक प्रयोजन, और अलौकिक प्रयोजन ,दोनों प्रकार के मनोरथ सिद्ध होते हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष

पर्यावरण विरासत का विकृत मुखौटा

पर्यावरण हमारी पृथ्वी पर जीवन के निर्वाह के लिए प्रकृति का उपहार है। जीवित रहने के लिए हम जिन तत्वों का उपयोग करते हैं, वे पर्यावरण की श्रेणी में आते हैं, जैसे हवा, पानी, प्रकाश, भूमि, पेड़, जंगल और अन्य प्राकृतिक तत्व। हमारा पर्यावरण पृथ्वी पर स्वस्थ जीवन के अस्तित्व में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दीर्घायु और स्वस्थ मानव जीवन के लिए यह आवश्यक है कि पर्यावरण के इन सभी पांच घटकों को प्रदूषित न करते हुये भविष्य के लिए संरक्षित किया जाए। फिर भी मानव निर्मित तकनीक और वर्तमान युग के आधुनिकीकरण के कारण हमारा पर्यावरण दिन-ब-दिन नष्ट होता जा रहा है। इसलिए आज हम प्रतिकूल पर्यावरण प्रदूषण की विकट समस्या से प्रभावित हैं। शहरीकरण, औद्योगीकरण और प्रकृति के प्रति हमारे व्यवहार के कारण पर्यावरण प्रदूषण दुनिया की सबसे बड़ी समस्या है और इसका समाधान पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रत्येक नागरिक के निरंतर प्रयासों से ही संभव है।

शाबाश इंडिया

सामान्य अर्थ में, हमारा पर्यावरण आवरण एक जीवन जैसी इकाई है जो हमारे जीवन को प्रभावित करने वाले सभी जैविक और अजैविक तत्वों, प्रक्रियाओं और घटनाओं के तथ्यों से बना है। यह हमारे चारों ओर व्याप्त है और हमारे जीवन की प्रत्येक घटना इसी पर निर्भर करती है और इसके द्वारा संपादित होती है। मनुष्य द्वारा की जाने वाली सभी गतिविधियाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण को प्रभावित करती हैं। इस प्रकार एक जीव और उसके पर्यावरण के बीच एक संबंध भी है, जो अन्योन्याश्रित है। मनुष्य, पशु, वनस्पति, पेड़-पौधे, मौसम, जलवायु सभी पर्यावरण में समाहित हैं। पर्यावरण न केवल जलवायु में संतुलन बनाए रखता है बल्कि जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें भी प्रदान करता है।

पारिस्थितिक तंत्र की हरी-भरी हरियाली की बदौलत हम शुद्ध हवा में सांस ले सकते हैं और प्रदूषण भी कम होता है। पेड़ों, प्राकृतिक वनस्पतियों, जल, प्राकृतिक संसाधनों, बिजली और अन्य संसाधनों की रक्षा करके हम पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं। पर्यावरण क्षरण और ग्लोबल वार्मिंग को कम करने के लिए हमें सभी संभव उपायों का पूरी तरह से पालन करना चाहिए।

प्लास्टिक एक ऐसा पदार्थ है जो जल, थल और वायु तीनों के लिए हानिकारक है। इससे निकलने वाली हानिकारक गैस पर्यावरण को बहुत बुरी तरह प्रभावित करती है। प्रकृति के साथ-साथ इसका हमारे स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। आज के समय में प्लास्टिक का उपयोग भारी मात्रा में हो रहा है। हमें प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए। जलवायु परिवर्तन के फलस्वरूप बिगड़ता पर्यावरण पूरे विश्व के लिए सबसे बड़ी चिंता का विषय है। ऐसे में प्लास्टिक से होने वाले प्रदूषण को रोकना एक बड़ी चुनौती है। हर साल कई लाख मीट्रिक टन सिंगल यूज प्लास्टिक का उत्पादन होता है, जो मिट्टी में नहीं घुलता और बायोडिग्रेडेबल होता है। ऐसा प्लास्टिक, जिसे हम सिर्फ एक बार इस्तेमाल करते हैं, सिंगल यूज प्लास्टिक कहलाता है। सरल भाषा में हम इसे डिस्पोजेबल प्लास्टिक कहते हैं। इसलिए दुनिया भर के देश सिंगल यूज प्लास्टिक के इस्तेमाल को रोकने के लिए कठोर रणनीति अपना रहे हैं ताकि सिंगल यूज प्लास्टिक से होने वाली बीमारियों और प्रदूषण को नियंत्रित किया जा सके।

तब से प्लास्टिक हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। हमारे द्वारा उपयोग की जाने वाली लगभग सभी चीजों में प्लास्टिक होता है। अगर हम अपने किचन की बात करें तो प्लास्टिक के बिना आज के किचन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है. किचन में इस्तेमाल होने वाले बर्तन हों या उपकरण, प्लास्टिक किसी न किसी रूप में मौजूद है। लेकिन प्लास्टिक को दो प्रकार में बांटा गया है। प्लास्टिक जिसे आप बार-बार इस्तेमाल करते हैं। जैसे कि आपके किचन में इस्तेमाल होने वाले कई तरह के बर्तन या उपकरण। दूसरे प्रकार का प्लास्टिक वह होता है जिसे केवल एक बार उपयोग करके फेंक दिया जाता है। जैसे बाजार से सब्जी और किराने का सामान घर लाने के लिए इस्तेमाल होने वाले दूध के पाउच, पॉलिथीन की थैलियां या पन्नी, चिप्स, बिस्कुट आदि के पैकेट या स्ट्रॉ, कप, चम्मच और पेय पदार्थों की बोतलें। यह सब प्लास्टिक है जिसका पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता है। इसे एक बार इस्तेमाल करके फेंक दिया जाता है। एक अनुमान के आधार पर साठ प्रतिशत प्लास्टिक को रिसाइकल नहीं किया जा सकता है, इसलिए यह कचरा हजारों सालों तक बना रहता है। इससे हमारा पीने का पानी दूषित हो जाता है। इसमें कैंसर जैसी घातक बीमारी फैलाने वाले तत्व पाए जाते हैं। यह प्लास्टिक समुद्र में

जाकर वहां के जानवरों के लिए घातक बन जाता है और समुद्री भोजन करते समय यह जहरीला प्लास्टिक इंसानों और जानवरों के शरीर में प्रवेश कर जाता है और पाचन तंत्र में इसे पचाने की क्षमता कम होने के कारण यह घातक भी हो जाता है। इसका जीता जागता उदाहरण यह है कि सड़कों पर घूमने वाले मवेशी खासकर गाय इस प्लास्टिक को खा जाते हैं और इसके दुष्प्रभावों के कारण हर साल सिंगल यूज प्लास्टिक के कारण हर साल कितनी ही निरीह गायों की जान चली जाती है। दरअसल, मौजूदा समय में देश में प्लास्टिक बनाने वाली कंपनियों के सही सर्टिफिकेशन के लिए कोई कानूनी और उचित एजेंसी नहीं है। ऐसे में कंपनियां अपनी सुविधा के अनुसार मनमाने ढंग से प्लास्टिक का उत्पादन करती हैं। इसलिए जानकारों का कहना है कि अगर 'सिंगल यूज प्लास्टिक' पर पूरी तरह से रोक लगानी है तो इन कंपनियों के उत्पादों की निगरानी और प्रमाणन की समुचित व्यवस्था करनी होगी. कचरा प्रबंधन के साथ भारत की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक ग्रेडिंग है, जिससे कूड़े में प्लास्टिक की वास्तविक मात्रा का अनुमान लगाना मुश्किल हो जाता है। प्लास्टिक कचरे का सही आकलन नहीं होने के कारण इसके निस्तारण की प्रक्रिया प्रभावित होती है। साथ ही हमें प्लास्टिक के कुछ इको-फ्रेंडली और किफायती विकल्प भी खोजने होंगे, क्योंकि अगर कोई किफायती विकल्प नहीं होगा तो लोग इसका इस्तेमाल करने को मजबूर होंगे। हालांकि किसी भी कानून या अभियान की सफलता उसमें आम जनता की भागीदारी पर निर्भर करती है। इसके उद्देश्यों को तय करना हम पर और आप पर निर्भर करता है कि हम अपनी धरती को कितना खूबसूरत और सुरक्षित बनाना चाहते हैं। स्वच्छ, हरा-भरा पर्यावरण हमारे यथार्थ जीवन की बुनियादी आवश्यकता बनता जा रहा है। दूषित हवा, पानी और जमीन के रूप में पर्यावरण प्रदूषण से जीवन को नुकसान हुआ है। सांस न लेने योग्य वायु गुणवत्ता, पीने योग्य पानी और प्रदूषित इलाके के परिणामस्वरूप कई बीमारियाँ हैं। यदि दुनिया को जीवित रहना है, तो प्रदूषण से निपटना और रोकना होगा। स्वच्छ हवा और भूमि की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने पर ही स्वस्थ जीवन जीना संभव है। एक अप्रदूषित, स्वच्छ वातावरण जीवन के बेहतर स्तर का सूचकांक होता है।

लेखक: प्रो. के. बी. शर्मा
प्राचार्य एसएस जैन सुबोध पी. जी.
स्वायत्तशासी महाविद्यालय जयपुर।

धर्मेन्द्र सिंह शेखावत बने स्टेट बैंक आफ इंडिया के निदेशक

पहले इंडियन आयल कॉरपोरेशन में भी डायरेक्टर रह चुके हैं शेखावत

जयपुर. कासं

जयपुर निवासी चाटर्ड अकाउंटेंट धर्मेन्द्र सिंह शेखावत को स्टेट बैंक आफ इंडिया का निदेशक बनाया गया है। भारत सरकार ने इस संबंध में गजट नोटिफिकेशन जारी करते हुए देशभर में चार निदेशकों की नियुक्ति की है। इनमें से शेखावत एक हैं। शेखावत पूर्व में इंडियन आयल कोरपोरेशन में भी निदेशक पद पर सेवाएं दे चुके हैं। भारत सरकार की ओर से जारी किए गए राजपत्रित आदेश के अनुसार भारतीय स्टेट बैंक (SBI) ने अपने केंद्रीय बोर्ड में शेयरधारकों के निदेशकों के लिए चुनाव के परिणाम घोषित किए हैं। इस घोषणा के साथ शेयरधारकों की आम बैठक को रद्द कर दिया गया है, जिसमें चुनाव होने थे। भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम, 1955 में उल्लिखित दिशा-निर्देशों के अनुसार चुनाव के लिए नामांकन आधिकारिक तौर पर 26 मई, 2023 को शाम 5:00 बजे तक लिए गए थे। धारा 19ए और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) के निदेशक मंडल में निर्वाचित निदेशकों के लिए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के श्फिट एंड प्रॉपरश् मानदंड के अनुसार चार उम्मीदवारों का वैध नामांकन पाया गया। राजपत्र के अनुसार निर्वाचित शेयरधारकों के निदेशक, जो 26 जून, 2023 से 25 जून, 2026 तक तीन साल का कार्यकाल पूरा करेंगे, इस प्रकार हैं:

- ★ धर्मेंद्र सिंह शेखावत, जयपुर
- ★ केतन शिवजी विकमसे, परेल, मुंबई
- ★ मृगांक मधुकर परांजपे, विले पार्ले पूर्व, मुंबई
- ★ राजेश कुमार दुबे, लोअर परेल, मुंबई

भारतीय स्टेट बैंक सामान्य विनियम, 1955 के विनियम 40(3) के अनुसार, चार रिक्तियों के लिए केवल चार वैध नामांकन प्राप्त हुए। ऐसे में इन्हें बैंक के केंद्रीय बोर्ड में शेयरधारकों के निदेशक के रूप में चुना गया है।

आईएलओ की कांफ्रेंस में भाग लेने हेतु WCREU महामंत्री कॉमरेड मुकेश गालव जेनेवा के लिये रवाना

गंगापुर सिटी. शाबाश इंडिया

अंतर्राष्ट्रीय श्रम सम्मेलन में जिनेवा के लिए भाग लेने हेतु कोटा से नई दिल्ली के लिए नंदा देवी एक्सप्रेस से रवाना हुए वेस्ट सेंट्रल रेलवे एम्पलाईज यूनियन के महामंत्री कांग्रेस मुकेश गालव का गंगापुर सिटी में यूनियन के मंडल उपाध्यक्ष नरेंद्र जैन सहायक मंडल मंत्री प्रकाश शर्मा के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने जोरदार नारेबाजी करते हुए तिलक लगाकर साफा पहनाकर एवं माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया। इस दौरान कार्यकर्ता उनकी सफल यात्रा के लिए कामरेड गालव को बधाई देते रहे एवं नारेबाजी करते रहे। इस अवसर पर यूनियन के पदाधिकारी गजानंद शर्मा,शशि शर्मा, मनोज शर्मा, रघुराज सिंह, ऋषि पाल सिंह, हरीमोहन गुर्जर, इमरान खान, आबिद खान, शरीफ मोहम्मद, मनमोहन शर्मा,

अजय गुर्जर, आदिल खान, नदीम मोहम्मद, अशोक गुप्ता, योगेंद्र शर्मा, अशोक कुमार, एम मनोज शर्मा, नेम मीणा, हरिमोहन मीना, जुनैद खान, घनश्याम मीणा, विष्णु शर्मा, विजय सिंह गुर्जर सहित दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित थे।

अन्तर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी के प्रवचन से...

किसी एक के चले जाने से ज़िन्दगी नहीं रूक जाती..
मगर ये भी सच है मित्रो,
हजारों मिल जाने से भी जिन्दगी पूरी नहीं हो पाती..!

इसलिए मित्रो - हजारों ग्रन्थों और किताबों को पढ़ने से जो परिवर्तन नहीं आता, वो एक किताब को पढ़ने से आ सकता है।

मृत्यु घाटः महिने में एक बार श्मशान घाट जायें और जलती चिता को देखकर आयें। चिता देखने से जो मन में परिवर्तन आयेगा, आशक्ति कमेगी और बुरे कार्यों से विरक्ति होगी, वो ग्रन्थों और पुराणों को पढ़ने से नहीं आयेगी। आप दुनिया के तमाम शास्त्र पढ़ डालो, तमाम मजहबों और धर्म ग्रन्थों को देख लो और पढ़ लो, जीवन का सत्य समझ में आ जाये इसकी कोई गारन्टी नहीं है। गीता पढ़ो, कुराण पढ़ो, वेद पढ़ो, बाइबिल पढ़ो, जिन सूत्र पढ़ो, जीवन का यथार्थ, जीवन का सत्य समझ में आ जाये ये जरूरी नहीं है। लेकिन मृत्यु घाट पर 7 दिन, 15 दिन, 30 दिन में एक बार जाकर आओ। जीने, कमाने और जोड़ने का अर्थ समझ में आ जायेगा। इसलिए श्मशान घाट यानि मृत्यु शास्त्र। वैसे भी आज कल लोग ग्रन्थ और पुराणों को कहाँ पढ़ रहे हैं। जो ग्रन्थो को दिन भर खोलकर बैठे हैं - वो या तो दूसरों को समझाने के लिये या दूसरों की नजरो में ज्ञानी बनने के लिये इतनी मेहनत कर रहे हैं। जीवन के दो ही सत्य है --- मौत और परमात्मा।
मौत हर पल तुम्हारे साथ है और परमात्मा तुम्हारी सभी हरकतों को देख रहा है...!!!

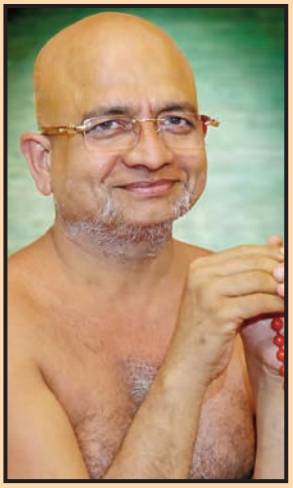

नरेंद्र अजमेरा, पियुष कासलीवाल औरंगाबाद ।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादकः राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया
shabaasindia@gmail.com
weeklyshabaas@gmail.com